हिन्दी (Elective)– 2018

सभी प्रश्नों के उत्तर दें ।

प्रश्न.1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़े तथा पुछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:

लगभग दो सौ वर्षों की गुलामी ने भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान को पैरों से रौंद डाला । हमारी संस्कृति को समाप्त कर दिया, हमारे विश्वासों को हिला दिया और हमारे आत्माविश्वास को चकनाचूर कर दिया । किन्तु अपने इस बूढ़े देश से प्यार करने वाले, इसके एक सामान्य संकेत पर प्राण निछावर करने वाले दीवानों का अभाव न था । एक आवाज उठी और देखते ही देखते राष्ट्र का आत्माभिमान उन्मत्त हो उठा । इतिहास साक्षी है – जाने और अनजाने सहस्त्रों देशभक्त स्वतंत्रता की अनमोल निधि को पाने के लिए शहीद हो गए ।

(क) दो सौ वर्ष की गुलामी से भारत को क्या-क्या क्षति पहुँची?
(ख भारत को वृद्ध भारत अथवा बूढ़ों का देश क्यों कहा गया है?
(ग) 'एक आवाज उठी' में किस आवाज की बात कही गई है?
(घ) इतिहास किस बात का साक्षी है ?
(ङ) इस गद्यांश का एक शीर्षक लिखिए ।

उत्तर:(क) लगभग दो सौ वर्षों की गुलामी ने भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान को पैरों से रौंद डाला । हमारी संस्कृति को समाप्त कर दिया, हमारे विश्वासों को हिला दिया और हमारे आत्मविश्वास को चकनाचुर कर दिया।

(ख) भारत वहुत ही प्राचीन और प्राचीन संस्कृतियों वाला देश है इसलिए इसे बूढ़ा भारत अथवा बूढ़ों का देश कहा गया है।

(ग) 'एक आवाज उठी' में राष्ट्र के आत्माभिमान की आवाज उठने की बात कही गई है।

(घ) इतिहास हजारों देशभक्त की स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद हो जाने का साक्षी है।

(ङ) देश के वीर

प्रश्न.2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पद्यांश से संबंधित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें :

सच है विपत्ति जब आती है, कायर ही को दहलाती है ।
वीर नहीं विचलित होते, क्षण एक धीरज नहीं खोते ।
काँटों में राह बनाते हैं, शूलों को गले लगाते हैं ।
है कौन विघ्न ऐसा जग में, जो टिक सके वीर नर के मग में
मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है ।
खम ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़ ॥

(क) विपत्ति का प्रभाव किस-किस पर कैसा पड़ता है ?
(ख) इस कवितांश के आधार पर वीरों की क्या पहचान है ?
(ग) पत्थर का पानी वनना और पर्वत के पाँव उखड़ना, क्या संभव है? यदि हाँ, तो कैसे ?
(घ) इस काव्यांश से आपको कौन-सी प्रेरणा मिलती है ?
(ङ) काव्यांश का एक सुन्दर-सा शीर्षक लिखिए ।

उत्तर:

(क) विपत्ति का प्रभाव कायर व्यक्ति पर पड़ता है। कायर व्यक्ति विपत्ति आने पर विचलित हो उठता है और अपना धीरज भी खो देता है।

(ग) मनुष्य अपने साहस से कुछ भी कर सकता है। पत्थर का पानी बनना और पर्वत का पाँव उखड़ना अर्थात् मुस्किल से भी मुस्किल काम मनुष्य अपने साहस और वुद्धि के वल पर कर सकता है।

(घ) इस काव्यांश से हमें विपत्ति आने पर उसका संयम के साथ सामना करने की प्रेरणा देती है।

(ङ) जीवन का सत्य

(ख) वीर व्यक्ति विपत्ति आने पर विचालित नहीं होता है और न ही अपना ध रेज खोता है। वीर व्यक्ति संयम के साथ विपत्ति का सामना करता है।

प्रश्न.3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें:

(क) आज के राजनेता
(ख) आतंकवाद : एक वैश्यिक समस्या
(ग) महापुरुषों का जीवन : प्रेरणा स्रोत
(घ) नारी तेरे रूप अनेक ।

उत्तर- (क) आज के राजनेता

नेता यानी की जो लोगों के द्वारा चुने जाते हैं ऐसे व्यक्ति के तौर पर जो उनके प्रश्नों, समस्या और उनके सुझाव को उचित अधिकारी तक पहुँचाए और न्याय दिलवाए। नेताओं को निस्वार्थ भावना से लोगों के हर काम को पूरा करना चाहिए। आजादी के समय के नेता और आज के नेता में जमीन आसमान का फर्क नजर आता है। उस समय के लोकनायक देश के विकास और जनता के लिए निस्वार्थ भाव से सिर्फ देश की सेवा में लगे रहते थे। परन्तु वर्तमान समय के नेता अपना और अपने संबंधियों का स्वार्थ को पूरा करने में लगे रहते हैं। जनता द्वारा दिए गए आयकर और अन्य करों से प्राप्त हुए धन को देश की प्रगति से ज्यादा स्वयं एवं अन्य खरचो को निकालने के लिए ज्यादा उपयोग किया जाता है। आज के नेताओं का चरित्र आदर्श कहलाने योग्य नहीं है। जब हम गुलाम भारत की बात करते हैं,तो हमारे आगे हजारों उदाहरण प्रस्तुत हो जाते हैं, जिन्होंने देश को बहुत कुछ दिया था। जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, तिलक, लाला लाजपत राय, बल्लभ भाई पटेल इत्यादि ऐसे नेता से लोग प्रेरणा लेते थे और अपने बच्चों को उनके समान बनाना चाहते थे। परन्तु आज के नेता ऐसे हैं जिनमें देशभक्ति, सदाचार, कर्मण्ता, लोक सेवा, ईमानदारी इत्यादि भावों का दूर दूर तक नामों निशान नहीं दिखाई देता है। आजकल के बच्चे अभिनेता या अभिनेत्री को अपना आदर्श बनाना पसंद करते हैं परन्तु नेता को नहीं। इनका चरित्र लोगों को आकर्षित नहीं करता अपितु उनसे घृणा ही उत्पन्न होती है।?

मनुष्य को उसके चरित्र से ही पहचाना जाता है। उनका चरित्र जितने सद्गुणों से युक्त होगा, लोग उससे उतना ही आकर्षित होंगे। नेता के लिए चरित्र बहुत महत्वपूर्ण होता है। वह देश के लोगों का नेतृत्व करता है। उसके चरित्र में ईमानदारी और सदाचार होना परम आवश्यक है।

(ख) आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या

फ्रांस का पेरिस शहर आतंकवादी हमलों से दहल गया। पूरा का पूरा पश्चिम एशिया आतंकवादियों की बर्बरता से त्रस्त है। मुंबई पर आतंकवादी हमला, ब्रिटेन में सीरियल बम धमाके, पाकिस्तान में बच्चों के स्कूल में कल्लेआम-पूरा विश्व आज आतंकवादी गतिविधियों से चिन्तित है।

अचानक आक्रमण करके निर्दोषों की हत्या कर देना, राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक सम्पत्तियों को नुकसान पहुँचाना, सड़क और दूरसंचार माध्यमों को नष्ट कर देना, बैंकों को लूट लेना, सामूहिक नरसंहार करना, लोगों को मार डालना, सार्वजनिक स्थलों पर शक्तिशाली बम विस्फोट करना, हवाई जहाजों का अपहरण करना इत्यादि आतंकवादी का रवइयों के अत्यन्त नृशंस रूप हैं।

भारत भी आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आज कश्मीर विभिन्न आतंकवादी गुटों की हिंसक कारवाईयों का अखाड़ा बना हुआ है। इसके भयानक विध्वंस परिणामों की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। भय, मार, आतंक, हिंसा और हत्या से किसी समस्या

का हल नहीं निकलता। हल सामाजिक और राजनीतिक ही हो सकते हैं। आतंकवाद वस्तुत: मानवता के माथे पर कलंक का टीका है। आतंकवाद की समाप्ति के लिए क्षेत्रीय असंतोष को दूर करना होगा। सब लोगों को समान उन्नति का अवसर प्रदान करना होगा। लोगों में जागृति लानी होगी। राष्ट्रीयता एवं विश्वबंधुत्व की भावना जगानी होगी।

(ग) महापुरूषों का जीवन : प्रेरणा स्रोत

हमारे देश में अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया है। उन्होंने आने वाली पीढ़ी और देश के हित के लिए अपना जीवन भी समर्पित कर दिया। विवेकानंद, महात्मा गांधी, नेहरू, तुलसीदास, कालीदास, भगत सिंह जैसे अनेक महापुरूषों ने इस पवित्र धरती पर जन्म लिया जो आज भी अपने काम के लिए जाने जाते हैं। वे बहुत से लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं।

वर्तमान समय में बच्चे गलत राह पर चल पड़े हैं। उन्हें गलत और सही के बीच में फर्क नहीं समझ आ रहा है। इसलिए हमें इन महापुरूषों के किए गए कार्यों से कुछ सिखना चाहिए। उनके सदाचार, सद्गुण, परोपकार की भावना को हमें अपनाना चाहिए और कुविचारों को दुर करना चाहिए। ऐसा करने पर ही हम जीवन के सही मार्ग पर चल सफलता प्राप्त कर सकते हैं। छात्रों को विशेष कर महापुरूषों के वारे में जानना चाहिए उनके कार्यों का सम्मान करना चाहिए। युवा ही देश का भविष्य है और अगर वे ही गलत रहा पर चल पड़ेंगे तो देश की उन्नति नहीं हो पाएगी। हमें महापुरूषों को प्रेरणा का स्रोत बनाना चाहिए ताकि हम भी उनकी तरह देश के हित के लिए कुछ कर सके, और हम भी किसी के मार्ग दर्शक बने। हमें महापुरूषों के किए गए कार्य प्रेरणा देती है कि हम भी कुछ कर सके जीवन को सफल बना सके और भविष्य में हम किसी और के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

(घ) नारी तेरे रूप अनेक

''यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमन्ते तत्र देवता'' मुनी ने कहा है जहाँ नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं। नारियों के बिना धार्मिक या सामाजिक कोई भी कार्य सफल नहीं होता है। भारतीय संस्कृति में नारी अतीव गौरव की अधिकारिणी सदा रही है। नारी को लक्ष्मी स्वरूप माना जाता है।''बिन धरनी घर भूतक डेरा।'' अर्थात् नारी के बिना घर भूतों का डेरा है। अपने चरित्र बल से, साधना से, त्याग से, नारी अपने कुल की समाज की उद्धारक बन जाती है। वास्तव में नारी सृष्टि की अनुपम कृति है। देश की रीढ़ है नारी।

नारी एक है पर उनके रूप अनेक हैं। माँ के रूप में नारी जननी है, नारी माँ के रूप में अपनी संतान के हितार्थ कार्य में संग्लग्न रहती है। अपनी संतान को नौ महीने गर्भ में धारण करके तथा विविध कष्ट सहकर उसका पोषण करने के कारण माता की पदवी सबसे प्रमुख है। जगत में माता ही ऐसी है जिस का स्नेह संतान पर जन्म से लेकर शैशव, बाल्य, यौवन और प्रौढ़ा अवस्था तक बना रहता है। नारी बहन के रूप में अपने भाई के लिए मात्र राखी ही नहीं, अपना प्यार भी उसमें समा देती है। पत्नी के रूप में अपने पति के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है। परिवार व देश की रक्षा और सम्मान के लिए वीरांगना झाँसी की रानी बन जाती है।

वास्तव में नारी के बिना संसार का कोई आस्तित्व नहीं है। एक महान लेखक ने कहा था माँ तेरे कितने रूप आँखों में है पानी आँचल में है दुध, वास्तव में नारी अपने रक्त की कण-कण से इस धरा को सन्चित करती रही है। नारी एक रूप अनेक-नारी माता, बहन, पत्नी अर्थात् हर रिश्ता सहजता से निभाती है। समाज को वृद्धि विकास हेतु नारी की आवश्यकता होती है, तभी तो कहते हैं नारी इस धरा की ध रोहर है।

प्रश्न.4. भ्रमण-दर्शन क बहुमुखी लाभ की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने महाविद्यालय में भी सत्रवार शैक्षणिक भ्रमण की व्यवस्था हेतु प्राचार्य के नाम एक प्रार्थना-पत्र लिखें ।

अथवा

दस्तक देती गर्मी में प्रखण्ड स्तर पर पेयजल की समुचित व्यवस्था हेतु प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को एक आवेदन-पत्र लिखें ।

उत्तर- सेवा में,
प्रधानाध्यापक , गारवाड़ी + 2 स्कूल , रांची
विषय-भ्रमण दर्शन के बहुमुखी लाभ।
महोदय,

यह सर्वविदित है कि हमारा विद्यालय नगर का एक प्रतिष्ठित विद्यालय है। माध्यमिक एवं + 2 की वार्षिक परीक्षाओं में हमारे स्कूल का प्रदर्शन अच्छा रहा है। परन्तु हम इसे और भी अच्छा कर सकते हैं ताकि हमारा स्कूल सदैव स्तरीय रहे। शैक्षणिक भ्रमण के द्वारा हम छात्रों की पढ़ाई में रूचि और बढ़ा सकते हैं। इससे हमें तरह-तरह के विषयों को जानने और समझने का मौका मिलेगे।
अत: शैक्षाणिक भ्रमण की व्यवस्था करें।
सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र
मोहित कुमार

दिनांक-2 अप्रैल, 2018
कक्षा - 10 अ

अथवा

सेवा में, अध्यक्ष
राँची नगर निगम, राँची।
विषय-पेयजल की समुचित व्यवस्था के संबंध में ।
महोदय,

आजकल पूरा हरमु इलाका पेयजल की अनियामित आपूर्ति से परेशान है। गर्मी के दिनों में हमें पानी की अत्याधिक आवश्यकता पड़ती है, परन्तु यहाँ पेयजल की पूर्ति पूरी नहीं हो रही है। लोग आधी रात से ही बरतन - बाल्टी लिये लाइनों में खड़े रहते हैं। पानी के लिए आपस में मारपीट भी हो जाती है।

अत: आपसे सविनय आग्रह है कि इस समस्या से निजात दिलाने के लिए त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई करें। लाखों लोगों का जीवन इस समस्या के कारण बिल्कुल अव्यवस्थित हो गया है।

भवदीय
सरजू राम

दिनांक - 2-4-18
हरमु हाउसिंग कॉलोनी, राँची

प्रश्न.5. 'शराबमय होता समाज हमारा' विषय पर एक संक्षिप्त संपादकीय लिखें ।

अथवा

अपने महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

उत्तर- वर्तमान समय में हमारा समाज शराबमय होता जा रहा है। युवा वर्ग शिक्षा, अनुशासन, परोपकार, सद्गुण की भावना को न अपनाकर नशे की आदत को अपना रहे हैं। सिगरेट, गुटका आदि जैसे नशीले पदार्थो का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है जानने के बाद भी इनका सेवन करते हैं।

शराब केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी हानिकारक है। नशे में युवा गलत काम कर रहे हैं। बलातकार और रेप के मामले आए दिन हमें सुनने के मिल रहे हैं। लड़कियों को अकेले घर से निकलने के लिए भी सोचना पड़ता है। लोग शराब के नशे में मार-पीट भी करते हैं। इन सभी से हमारा नैतिक स्तर गिरते जा रहा है।

आज हमारे देश को जरूरत है कड़े नियमों की जिससे हम इस स्थिति को सुधार सकते हैं। नियम का पालन न करने वालों को कड़ी-से- कड़ी दंड दी जानी चाहिए। शराबमय युवा वर्ग हमारे देश की लड़कियों की सुरक्षा प्रणालियों पर सवाल खड़े कर रहा है। बच्चों को शुरूआत से ही नैतिक मुल्यों की शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे गलत राह पर कभी न चले और न कुसंगतियों को अपनाए। हमारी और देश की प्रगति तभी होगी जब हम नारी का सम्मान करें और अपने नैतिक स्तर को उठाए ।

अथवा

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

गत 23 जनवरी , 2018 को हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव हुआ। नगर के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री श्याम शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

थे। इस वर्ष विद्यालय में काफी उत्साह देखा गया। विद्यालय को पूरी तरह सजाया-सँवारा गया। ठीक ।।.00 बजे कार्यक्रम आरंभ हुआ। पहले एन. सी. सी स्काउट तथा यैंड के छात्रों ने स्वागत-कार्यक्रम प्रस्तुत किए। फिर मलखंभ, ड्रिल, डंबल, लेजियम के आकर्षक कार्यक्रम हुए। तत्पश्चात् मंच के कार्यक्रम प्रारंभ हुए। विद्यालय के छात्रों ने मंत्रमुग्ध करनेवाले अभिनय और गीत प्रस्तुत किए। प्राचार्य महोदय ने विद्यालय की प्रगति की रिपोर्ट पेश करते हुए विज्ञान के छात्रों के लिए नई प्रयोगशाला की कमी का उल्लेख किया। प्राचार्य के भाषण के बाद मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम की भूरि - भूरि प्रशंसा की तथा प्रयोगशाला के लिए 51,000रू दान देने की घोषणा की। विद्यालय का प्रांगाण तालियों की ध्वनि से गूँज उठा। मुख्य अतिथि ने प्रतिभाशाली छात्रों को चहुँमुखी उन्नति की दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दी तथा उनके प्रोत्साहन के लिए कई पुरस्कार-योजनाएँ शुरू करने की भी घोषणा की। अंत में इस वर्ष के पुरस्कार-विजेताओं को मुख्य अतिथि से पुरस्कार किया गया। इस प्रकार यह कार्यक्रम सोल्लास संपन्न हुआ।

प्रश्न.6. 'नीम एक गुण अनेक' अथवा 'चाय में पाँच गुण सात अवगुण' विषय पर एक आलेख प्रस्तुत करें ।

अथवा

आज की भाग-दौड़ भरी तनावपूर्ण जीवन शैली को रेखांकित करते हुए 'जीवन है या उफनता दूध' विषय पर एक फीचर तैयार करें।

उत्तर- नीम का प्रयोग शुरूआत से ही उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है। नीम के और भी कई फायदे हैं इसलिए कहा गया है नीम एक गुण अनेक। नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के लिए उपयोगी माने जाते हैं। नीम मधुमेह रोग के ठीक करने में भी उपयोगी होता है। नीम मलेरियाग्रस्त लोगों और खुन को साफ करने में भी उपयोग किया जाता है। नीम का प्रयोग जलने और छाले पड़ जाने पर भी किया जाता है।

नीम औषधियों गुणों से युक्त है और बहुत ही उपयोगी और लाभदायक है हमारे लिए। कई लोगों की दिन की शुरूआत चाय से होती है और चाय पर ही खत्म। चाय पीने के भी बहुत फायदे है-(i) चाय में एंटीऑक्सीडेंट शामिल होता है जो उम्र बढ़ाने और प्रदूषण के प्रभाव के प्रकोपों से आपके शरीर की रक्षा करता है। (ii) चाय दिल का दौरा और स्ट्रोक के जोखिम को कम करता है। (iii) अध्ययन में पाया गया है चाय पीने वालों की हड्डियां, मजबूत होती है। (iv) चाय दांत को भी मजबूत बनाता है क्योंकि चाय फ्लोराइट और टैनिंन से बनी होती है जो प्लेग को दूर रखता है। (v) चाय कैंसर के विरूद्ध सुरक्षा करती है क्योंकि इसमें पॉलीफिनॉल और एंटी ऑक्सीडेंट मिला होता है।

चाय पीने से हमें फायदे के साथ साथ नुकप्सान भी है-(i) चाय का सेवन रक्त की उष्मा को नष्ट करता है। (ii) चाय में उपलब्ध कैफीन हृदय पर बुरा प्रभाव डालता है (iii) चाय से स्नादविक कमजोरी और गैस की समस्या उत्पन्न होती है। (iv) चाय से न्यूरो लाजिकल गड़बड़िया भी होती है। (v) अनिद्रा की शिकायत (vi) चाय से उपलब्ध यूरिक एसिड से मुत्राशय निर्बल हो जाता है। (vii) चाय से कब्ज की समस्या भी उत्पन्न होती है और मल निष्कासन में कठिनाई आती है। चाय हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी है और हानिकारक भी।

अथवा

आज की जीवन शैली तनावपूर्ण है, सभी कोई एक-दूसरे से आगे जाने की होड़ में लगे हुए हैं। यहाँ तक की अपनों के लिए भी किसी के पास वक्त नहीं है। सभी कोई जीवन के सुखों को पाने के लिए और जीवन सरलता से व्यतीत करने के चलते इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें पता ही नहीं जीवन का असली सुख परिवार के साथ मिल-जुल कर रहने में है। आजकल के बच्चे भी मोबाइल कंप्यूटर, पिज्जा बर्गर आदि में अपना बचपन खोते जा रहे हैं। आज सभी सफलता की रेस में लगे हुए हैं। जीवन में कामयाबी बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु ऐसी सफलता किस काम की जिसमें परिवार के साथ व्यतीत करने के लिए समय न हो, परिवार का साथ न हो। कामयाबी पाना जीवन में वर्तमान समय में बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु हमें काम और परिवार दोनों को नियमित रूप से समय देना चाहिए। आज की भाग - दौड़ से भरी जीदंगी में हम खुद को भी समय नहीं दे पाते। जीवन का दूसरा अर्थ ही संघर्ष होता है। जीवन में यही सफल होता है जो जीवन और उससे जुड़े लोगों को समझ सके। हमें सबको साथ लेकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। परन्तु इस भाग-दौड़ भरे जीवन में पता ही नहीं चलता जीवन है या उफनता दूध।'

प्रश्न.7. सप्रसंग व्याख्या करें :

रकत ढरा माँसू गला हाड़ भए सब संख ।
धनि सारस होई ररि मुई आइ समेटहु पंख ॥

अथवा

तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो सब खेत बना कर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को ?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो ।

उत्तर- प्रसंग-इस पद में विरहिणी नायिका की शारीरिक तथा मानसिक अवस्था का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यह पद 'पद्मावत' प्रबन्धकाव्य के 'बारहमासा' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

व्याख्या-कवि कहता है कि पुस के महीने में इतनी सर्दी पड़ रही है मानो लग रहा है, खून सूख गया है, मांस गल गया है, हडिड्यां शंख समान पतली हो गई है। सारस की पत्नी चीख-चीखकर कह रही है कि मैं मरी जा रही हूँ, आकर मेरे पंख समेट लो।

सौंदर्य बोध-कवि ने इस पद में विरहिणी प्रिया की विरह-दशा का भावपूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है। भावों के अनुकुल भाषा का प्रयोग उचित रूप में किया गया है। वियोगिनी नायिका अपनी कथा 'चकवी' और 'कोयल' के द्वारा प्रदर्शित कर रही है।

अथवा

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कविता 'तोड़ो' से उद्यत है। इसके रचियता प्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय है।

इसमें कवि ने यह भाव प्रकट किया है कि जिस प्रकार उसर, बंजर भुमि को खेत में बदलना ही सृजन की आरंभिक क्रिया है, उसी प्रकार अपने मन से खीज को निकालकर ही सृजन की भाव-भूमि तैयार हो सकती है।

व्याख्या-कवि कहता है इस उसर-बंजर को तोड़ डालो, अर्थात् अनुपजाऊ जमीन की ऊपरी सतह को तोड़ दो। इस चरागाह और खाली छोड़ी गई भूमि को भी तोड़ दो। इन सबको खेत बनाकर ही छोड़ो। तात्पर्य यह है कि अनुपजाऊ और खाली पड़ी सारी भूमि को खेत बनाकर ही दम लो। मिट्टी के अंदर तो रस होता ही है, उससे वह बीज का पोषण करेंगी। कवि आगे कहता है हम अपने मन की खीज का क्या करे। अर्थात् धरती को तो खोदकर उपजाऊ बनाया जा सकता है, परंतु मन में आई कुढ़न हटाए बिना सृजन कैसे संभव है ? इसलिए कवि कहता है कि मन की खीज की गुड़ाई कर दो। जिस प्रकार मिट्टी को खोदकर भुरभूरी बना देने से वह उर्वरा बन जाती है, उसी प्रकार मन से झुँझलाहट निकाल देने से वह भी उर्वर हो जाएगा और सृजन कार्य करने में सक्षम हो जाएगा।

सौंदर्य बोध-भाषा में सरलता, सजीवता एवं प्रवाहमयता है। तोड़ो-तोड़ो तोड़ो और गोडो गोडो गोडो में पुनरूक्ति अलंकार है। काव्यांश में ध्यानात्मकता है।

प्रश्न.8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें :

(क) कवि ने अपनी पुत्री का तर्पण किस प्रकार किया ?

(ख) 'क्षण के महत्त्व' को उजागर करते हुए कविता का मूलभाव लिखिए।

(ग) बनारस में बसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है ?

(घ) कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर, धोखेबाज क्यों कहा है?

उत्तर:(क) कवि ने अपने विगत के समस्त पुर्नीत कर्मों को अपनी पुत्री को अर्पित करते हुए उसका तर्पण किया।

(ख) मानव जीवन के लिए एक-एक क्षण महत्वपूर्ण एवं सार्थक होता है। कविता के माध्यम से कवि ने जीवन में क्षण के महत्व के साथ ही उसकी क्षण भंगुरता को प्रतिष्ठापित किया है। कवि ने यह संदेश दिया है जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह छोटा होते हुए भी विशेषताओं से भरा हुआ है।

(ग) (i) बनारस में वसंत का आगमन अचानक होता है।

(ii) उस समय लहरतारा या मडुवाडीह की ओर से धूल का एक बवंडर उठता है और पूरे शहर का वातावरण धूल की किरकिराहट से भर जाता है।

(iii) जन-जीवन में नया उल्लास छा जाता है। भावनाओं का अंकुरण होने लगता है।

(iv) दशाश्वमेध घाट का आखिरी पत्थर कुछ और मुलायम हो जाता है।

(v) बंदरों की आँखों में एक अजीब-सी नमी आ जाती है।

(vi) भिखारियों के खाली कटोरो में भी आश्चर्यजनक चमक आ जाती है अर्थात् दीन-हीन लोग भी उल्लसित हो उठते हैं।

(घ) (i) कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण यह है कि हाथ फैलाने वाला या तो वास्तव में विवश होता है या वह धोखे से लोगों को मुर्ख बनाकर पैसा ऐंठने वाला होता है।

(ii) यदि वह वास्तव में मजबूर होता है तो, वह स्वयं को लाचार बताते हुए मदद माँगता है।

(iii) यदि वह भला-चंगा होते हुए भी हाथ फैलाता है, तो वह मेहनत से जी चुराने वाला कमजोर और धोखेबाज होता है।

प्रश्न.9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य बतलायें :

(क) जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे।
क्यों जीवहिं मेरे राम लाडिले ! ते अव निपट विसारे ॥

(ख) चकई निसि विछुरैं दिन मिला । हौं निसि वासर बिहर कोकिा॥
रैन अकेलि साथ नहीं सखि । कैसे जिऔं बिछोही पँखी ॥

(ग) जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इसको भक्ति दे दो -
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति दे दो ।

(घ) ऊँचे तरुवर से गिरे बड़े-बड़े पियराए पत्ते
कोई छः बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो-
खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई ।

उत्तर:

(क) भाव-सौंदर्य-यहाँ माता कौशल्या राम के वन गमन के बाद दुखी हैं। वह कहती हैं अपने इस प्रिय घोड़े को एक बार देखकर फिर से वन को चले जाना। जिसे जल पिलाकर अपने कमल रूपी हाथों से सहलाते थे, बार-बार पुचकारते थे, वह घोड़ा तुम्हारे विरह में दुखी है।

शिल्प सौंदर्य-यह पद ब्रजभाषा की रचना है। यहाँ वात्सल्य रस का अद्वितीय विवेचन है।

भाषा में सहजता, भावानुकूलता, प्रभावोत्पादकता आदि प्राचुर्य है। यहाँ अनुप्रास रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का विवेचन है।

(ख) भाव सौंदर्य-कवि कहता है कि पूस के महीने में इतनी सर्दी पड़ रही है कि चकवी रात को बिछुड़कर दिन में मिलती है। कोयल रात-दिन विरह वेदना में तड़प रही है। अकेली ही रात बितानी पड़ती है, उसका दोस्त उसके साथ नहीं है। बिछड़ा हुआ पक्षी कैसे जिए? विरह के कारण व्याकुल बाज पक्षी शरीर का भोजन कर रहा है।

शिल्प सौंदर्य-कवि ने विरहिणी प्रिया का विरह दशा का भावपूर्ण वर्णन प्रस्तुत है।

'वासर विरह' में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। वियोगिनी नायिका अपनी कथा 'चकवी' और 'कोयल' के द्वारा प्रदर्शित कर रही है।

(ग) भाव सौंदर्य-कवि कहता है यह दीप अकेला ही स्नेह से भरा हुआ है, यह गर्व से भरा है और अहं भाव से परिपूर्ण है। इस तात्पर्य यह भी है कि दीपक रूपी व्यक्ति में समस्त अच्छे गुण भरे हुए है। यह सर्वगुणसंपन्न है, इसलिए इसे समूह में सम्मिलित कर लेना चाहिए। इस प्रकार समाज के साथ उसकी अंतरंगता से समाज में सद्गणों की वृद्धि होगी और समाज मजबूत होगा।

शिल्प सौंदर्य-इन पंक्तियों में व्यक्ति को सर्वगुण-संपन्न बताते हुए उसकी सामाजिक उपयोगिता को प्रतिष्ठित किया गया है।

इसमें तत्सम प्रधान गंभीर भाषा का प्रयोग हुआ है। शब्दों का चयन अत्यंत सटीक एवं प्रभावपूर्ण है। दीप का प्रतीकात्मक प्रयोग दर्शनीय है। लाक्षणिक प्रयोग दृष्टव्य है।

(घ) भाव सौंदर्य-भाव यह है कि चहल - पहल भी सड़क के किनारे लाल बजरी पर ऊँचे घने पेड़ों से गिरे हुए बड़े-बड़े पीले पत्ते चरमर की ध्वनि करते पाँव के नीचे आ गए। सुबह के लगभग छह बजे गरम पानी से नहाकर आई-हुई-सी खिली-खिली हवा गोल-गोल घूमने वाली फिरकी जैसे आई और चल गई ।

शिल्प सौंदर्य-इन पंक्तियां में मनुष्य के प्रकृति से विमुख होने के साथ उसकी आधुनिक जीवन-शैली पर भी करारा व्यंग्य है।

'पियराए पत्ते' और ' हुई हवा' में अनुप्रास अलंकार है। कवि ने आकर्षक बिंब का सृजन किया है। चित्रात्मकता का गुण दर्शनीय है।

प्रश्न.10.सप्रसंग व्याख्या करें :

यदि चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य-पालन करना ही पड़ता है । इक्के से उतर कर इधर-उधर देखते हुए उसे चुपचाप इक्के पर रख लिया । 20 सेर वजन में रही होगी । ''न कूकूर भूँका, न पहरू जागा । '' मूर्ति अच्छी थी।

अथवा

टिहरी गढ़वाल में पेड़ों को बचाने के लिए आदमी के संघर्ष की कहानियाँ सुनी थीं । किन्तु मुनष्य के विस्थापन के विरोध में पेड़ भी एक साथ मिल कर मूक सत्याग्रह कर सकते हैं । इसका विचित्र अनुभव सिर्फ सिंगरौली में हुआ ।

उत्तर- प्रसंग-प्रस्तुत गद्य अवतरण ब्रजमोहन व्यास द्वारा लिखी आत्मकथा 'मेरा कच्चा चिट्ठा से अवतरित है। लेखक अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु भ्रमण करता रहता है, जहाँ भी उसे पता चलता है कि कुछ अच्छा मिल सकता है, तो वहीं चल पड़ता है।

व्याख्या-लेखक कौशाम्बी के निकट पसोवा गाँव जाता है, वहाँ उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता, वापसी पर एक गाँव से निकल रहा था कि अचानक उनकी दृष्टि पत्थरों के बीच रखी चतुर्मुख शिव की मूर्ति पर पड़ी। लेखक का मन ललचाया। उसने इधर-उधर देखा, जब कोई नहीं देख रहा था वह मूर्ति उठाई और अपने इक्के पर रख ली और कौशाम्बी वापस आ गया। लेखक उदाहरण देते हुए कहता है कि एक बिल्ली चाँद्रायण का व्रत करती है और अचानक चूहा उसके समक्ष आ जाता है तो बिल्ली अपना व्रत भूलकर चूहे को खा लेती है अर्थात् अपने व्रत का पालन करती है। ठीक उसी प्रकार लेखक ने किया। लेखक ने भी मूर्ति जब देखी तो उठा ली और ले जाकर प्रयाग संग्रहालय में रख दी अर्थात् अपने व्रत का पालन किया।

अथवा

प्रसंग-पूर्ववत्

व्याख्या-यहाँ लेखक सिंगरौली में हुए औद्योगीकरण का परिणाम बता रहे हैं कि उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि इतना सुंदर ग्रामीण प्रदेश था जिसे सरकार ने निर्ममता से उजाड़ दिया। इतना सुन्दर, भव्य, मनोहर, यह स्थान था, जिसे सरकार ने विस्थापित कर दिया। लेखक कहता है कि उसे अत्याधिक कष्ट इसलिए हो रहा है क्योंकि कितने वनवासियों का गुजारा इसी से चलता था। कई लोगों की आजीविका इसी पर निर्भर थी। इसका जमीन उपजाऊ था कि हजारों किसान यहीं फसल बोकर उससे अपना पेट भरते थे। परन्तु किसी ने इसके लिए नहीं सोचा, केवल विस्थापन ही किया।

प्रश्न.11.निम्नलिखित में से दो प्रश्नों के उत्तर लिखें :

(क) लेखक का गाँधी जी के साथ चलने का पहला अनुभव किस प्रकार का रहा ?

(ख) आँखें बंद रखने और आँखें खोल कर देखने के क्या परिणाम निकले?

(ग) साझे की खेती के बारे में हाथी ने किसान को क्या बताया?

(घ) अमझर से आप क्या समझते हैं ? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है?

उत्तर:

(क) (i) लेखक जब सेवाग्राम गया तो उसे पता चला की गाँधी जी भी सेवाग्राम में हैं और प्रतिदिन वे घूमने के लिए लेखक के भाई के क्वार्टर के सामने से जाते हैं।

(ii) लेखक भी सुबह जल्दी उठकर सात बजने का इन्तजार करने लगा क्योंकि गाँधी जी ठीक सात बजे वहाँ से जाते थे।

(iii) ठीक सात बजे आश्रम का फाटक लाँघकर गाँधी जी अपने साथियों के साथ सड़क पर आ गए थे। उन पर नजर पड़ते ही लेखक प्रसन्न हो उठा। गाँधी जी हू-ब-हू वैसे ही लग रहे थे जैसा उन्हें चित्रों में देखा था। यहाँ तक कि कमर के नीचे से लटकती घड़ी भी लेखक को परिचित सी लगी।

(iv) लेखक व उसके भाई बलराज दोनों थोड़ी ही देर में गाँधी जी के साथ जा मिले।

(v) बलराज ने लेखक का परिचय गाँधी जी से करवाया।

(vi) लेखक कभी आसपास देखता, कभी नजर नीचे किए जमीन की ओर गाँधी जी की धूल भरी चप्पलों को देखता। सहस लेखक को याद आया कि गाँधी जी एक बार रावलपिंडी भी आए थे।

(vii) लेखक ने रावलपिंडी के बारे में पूछा। गाँधी जी की भी यादे ताजी हो गई।

(viii) वे भी धीमे स्वर में बातें करने लगे और रावल पिंडी में बीते दिनों को याद करने लगे।

(ix) शीघ्र ही सब आश्रम में चले गए।

(x) यह लेखक का गाँधी जी के साथ घूमने का पहला अनुभव था, जो कि स्मरण रखने योग्य था।

(ख) आँखे बंद करने से काम पहले की तुलना में अधिक व अच्छा होने लगा, उत्पादन बढ़ गया।

आँखे खोलने से लोग एक-दूसरे को न देख सके, अपितु उनके समझ राजा खड़ा था। राजा को पता चल गया कि जनता ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है और वे दण्ड के अधिकारी हो गए।

(ग) साझे की खेती के बारे में हाथी ने किसान को बताया कि उसके साथ साझे की खेती करने से यह लाभ होगा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर खेतों को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे और खेती की अच्छी रखवाली हो जाएगी।

इसके प्रतीक अर्थ में कहा जा सकता है कि आम आदमी किसी राजनैतिक नेता से दोस्ती कर लेता है तो साधारण जनता पर उसका दबदबा बना रहता है और वह शान से जी सकता है।

(घ) (i) अमझर सिंगगैली के एक गाँव का नाम है अमझर से अभिप्राय है-आम के पेड़ो से घिरा गाँव, जहाँ आम झरते हैं।

(ii) जब से सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजैक्ट अंतर्गत के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे, तब से न जाने कैसे यहाँ आम के पेड़ खो गए।

प्रश्न.12.कविवर अज्ञेय अथवा लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दें ।

उत्तर- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'-श्री अज्ञेय का जन्म 7 मार्च, 1911 ई. को भागवान बुद्ध की जन्म भूमि कुशीनगर कस्या में हुआ था। उन्होंने सन् 1929 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय से बी. एस-सी की परीक्षा पास की, किन्तु बाद में साहित्य में रूचि होने के कारण अंग्रेजी विषय में एम. ए. करने की ठानी। 4 अप्रैल 1987 ई. को नई दिल्ली में उनका देहान्त हो गया। अज्ञेय हिंदी में 'प्रयोदवाद' और नयी कहानी और कविता के प्रवर्तक माने जाते हैं। सन् 1978 ई. में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रचनाएँ-भग्नदूत, चिंता, इत्यलम् हरी घास पर क्षण भर, इंद्धनुष रौंदे हुए ये, सागर मुद्रा, नदी की बाँक पर छाया, सदानीरा आदि काव्य-संग्रह है। उन्होंने तीनों 'तार सप्तको' का सम्पादन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई कहानी-संग्रह, उपन्यास, यात्रा-वृतांत आदि भी लिखे।

भाषा शैली-'अज्ञेय' की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, जिसमें छन्दों के साथ-साथ छन्द मुक्तकता भी है।

काव्य-शिल्प की विशेषताएँ :- अज्ञेय की कविताओं में विषयवस्तु की नवीनता है। अज्ञेज प्रकृति-प्रेम और मानव-मन के अंतर्द्वंदों के कवि हैं। उनकी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता का आग्रह है और बौद्धिकता का विस्तार भी है। अनकी भाषा में सरलता, गंभीरता व प्रवाहमयता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी-द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, बंगला, हिन्दी आदि भाषाओं एवं इतिहास, दर्शन, धर्म, संस्कृति आदि क्षेत्रों में उनका गहन अध्ययन रहा है। द्विवेदी जी का जन्म 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के बलिया ग्राम में छपरा आसवलिया में हुआ था। इन्होंने संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री परीक्षा उन्तीर्ण की। लखनऊ विश्वविद्यालय ने इनको डी. लिट् की मानक उपाधि से सम्मानित किया था। और भारत सरकार ने इनको पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया था। 1979 ई. की 19 मई को द्विवेदी जी का स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ-'अशोक के फूल' 'विचार और वितर्क' 'कल्पलता' 'कुटज' 'आलोक पर्व' आदि।

उपन्यास-चारूचंद्रलेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा तथा अनामदास का पौध'

भाषा शैली-आचार्य द्विवेदी की शैली आत्म कथात्मक विवेचनात्मक एवं व्यंग्यात्मक है। इनकी भाषा प्राजंल होते हुए भी सरल है तत्सम शब्दों के साथ ही अंग्रजी, उर्दू के शब्दों तथा लोकोक्तियों, मुहावरे व संस्कृत के उद्हरणों का भी प्रयोग द्विवेदी जी ने किया है।

प्रश्न.13.निम्नलिखित में से तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें :

(क) सूरदास के झोपड़े में लगी आग के दृश्य का वर्णन कीजिए।

(ख) शैला और भूप ने मिल कर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नयी जिन्दगी की कहानी लिखी ?

(ग) फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी करते हैं कैसे?

(घ) "अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ-उजाड़ जीवन-पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा ।" इस घोषणा पर अपनी टिप्पणी दीजिए ।

उत्तर: (क) सूरदास के झोपड़ी में आग लगने के बाद कुछ लोग आग बुझाने का प्रयास कर रहे थे, कुछ 'आग-आग' कहकर शोर मचा रहे थे, तो कुछ निराशापूर्वक चुपचाप खड़े होकर जलती हुई झोपड़ी को देख रहे थे। सूरदास भी दौड़ते हुए आते हैं। सभी उनसे आग लगने का कारण पूछते हैं। साथ ही एक-दूसरे पर झपड़ी जलाने का शक भी करते हैं। देखते ही झोंपड़ी जलकर राख का ढेर बन जाती है। लोग सुरदास को दिलासा देकर घर चले जाते हैं।

(ख) खेत का निर्माण-भूप सिंह का घर, खेत, माँ-बाप सभी भू-स्खलन में दबकर मर गए। थे। तब भूप सिंह ने सबसे ऊँचे पहाड़ पर अपना घर बनाने का निश्चय किया। वह शैला नामक लड़की से विवाह करके उसे अपने साथ ले आया। दोनों ने मिलकर मलबा तथा पत्थर हटाए और खेतों का निर्माण किया। खेतों में बर्फ न जम जाए इसलिए उन्हें ढलानदार बनाया।

पानी का प्रबंध-खेत बनाने के बाद खेती के लिए पानी की आवश्यकता थी। वे दोनों मिलकर खोज करने लगे और एक दिन उन्हें एक झरना मिल गया। झरना दूसरी तरफ गिर रहा था। दोनों ने बड़ी मेहनत से उसे अपने खेतों की ओर मोड़ लिया। इस प्रकार अपनी मेहनत से शैला और भूप ने नई जिंदगी की कहानी लिखी।

(ग) फुल केवल गंध ही नहीं देते, अपितु दवा का काम भी करते हैं, लेखक के गाँव में अनेक रोगों का उपचार फलों के द्वारा होता था। उनसे से निम्नलिखित का वर्णन लेखक ने पाठ में किया हैं-

(i) गाँव में फुलों की गंध से साँप, महामारी, देवी, चुड़ैल आदि की संबंध जोड़ा जाता है।

(ii) नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के लिए उपयोगी माने जाते हैं।

(iii) बेर के फूल को सूँघने से ततैया का डंक झड़ जाता है

(iv) आम के फूलों को भी अनेक प्रकार के रोगों में दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

(घ) अमेरिका उपभोक्ता संस्कृति में विश्व का अग्रणी देश है। स्पष्ट है कि अधिक उपभोग के लिए नाना प्रकार की वस्तुओं का सीमातीत उत्पादन होना चाहिए। इनका उत्पादन कल-कारखानों में होता है। जिन्से अत्यंत विषैली गैसों क्लोरो-फ्लोरो कार्बन डाई ऑक्साइड आदि निकलती है। यह गैसें वातवरण को गर्म कर रही है। इससे दुनिया प्रभावित हो रही है। उपभोक्तावादी अपशिष्टों के कारण भी पर्यावरण में असंतुलन आया है। दुनिया में अभी पर्यावरण का जो संकट सामने मुँह बाये खड़ा है उसमें सबसे बड़ी हिस्सेदारी अमेरिका और यूरोपीय देशों की है। किन्तु अमेरिका अपने उपभोग के तौर-तरीके बदलने के लिए तैयार नहीं है। वह पर्यावरण संकट के प्रति गंभीर नहीं है। वह अपनी जिम्मेदारी से कतरा रहा है। अमेरिका यह नहीं समझ पा रहा है कि पर्यावरण का बढ़ता और गहराता संकट एक दिन उसे भी लील जायेगा।

प्रश्न.14. 'नयी दुनिया' अखबार में मालवा की वर्षा से संबंधित आँकड़े बताइए ।

अथवा

पठित कहानी के आधार पर रूप सिंह की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर- 'नयी दुनिया' अखबार में संग्रहीत कतरनों में मालवा के 128 वर्षों की वर्षा का रिकार्ड मौजूद है। इस रिकार्ड से पता चलता है कि 1878 से 1899 ई. के बीच 1899 ई. का साल ही एक ऐसा साल था जब मालवा में 15.75 इंच पानी गिरा था। लोक में यह वर्ष छप्पन के काल के नाम से प्रसिद्ध है। उस समय भी राजस्थान से बहुत लोग मालवा आये थे। जिस समय सर्वत्र अन्न और जल के लिए हाहाकार मचा था उस समय भी मालवा में खाने के लिए भरपूर अन्न और पीने के लिए भरपूर पानी उपलब्ध था। ऐसा इसलिए संभव था, क्योंकि विक्रमादित्य आदि राजाओं ने मालवा में जगह-जगह कूएँ, तालाब और बावड़ियाँ बनवायी थी। घोर दुष्काल में इन सब ने मालवा के भूगर्भ जल का स्तर बनाये रखा। फलतः जल और फसल की मार यहाँ नहीं पड़ी। यही एक बात आँख खोलने वाली है कि यदि हमारे पूर्वजों ने मालवा में जल का कुशल प्रबंधन नहीं किया होता तो यहाँ का हाल भी और जगहों की तरह होता। अतः 'नयी दुनिया' की अखबार की कतरनें हमें संकेत करती है कि हम सब भी संभल जायें और बरसात के पानी को रोकने का उपाय करें। खाऊ उजाडू सभ्यता पर लगाम लगायें। इसी में हम सबका कल्याण है।

अथवा

रूप सिंह एक पहाड़ी किशोर था। न जाने क्यों उसे पर्वतीय जीवन रास नहीं आया। पहाड़ की जिंदगी छोड़कर वह देवकुंड भाग आया। संयोगवश उसे गॉडफादर के रूप में कपुर साहब मिल गये। उन्होंने उसे पर्वतारोहण की कला सिखायी और सैलानियों के लिए बेहतर गाइड बनाया।

रूप सिंह के मन में अपने अग्रज भूप सिंह को पहाड़ी मार्ग पर धक्का देकर, हाथ छुड़ाकर भाग जाने का घोर अफसोस था। ग्यारह वर्षों बाद जब वह अपने गाँव लौटा तो उसके हृदय में अपनों के लिए अपनत्व का सागर उमड़ रहा था। लेकिन उसके मन में लज्जा और सिसक के भी भाव भरे हुए थे। ग्यारह वर्षों तक उसने न तो अपनों की कोई खबर ली थी और न ही अपनी कोई खबर दी थी। रूप सिंह अपने अग्रज भुप सिंह की कठिन जिन्दगी तथा उनके अकेलेपन को देखकर करूणा से भर उठा था। वह भाई और भाभी को अपने साथ ले जाना चाहता था। उन्हें आराम और सुख देना चाहता था। लेकिन भूप सिंह ने अपना स्वाभिमान नहीं त्यागा।

रूप सिंह में कैशोर्यजन्य दुर्बलता थी। उसने लगन के साथ पर्वतारोहण सीखा था। वह दूसरों को प्रशिक्षित करने लगा था। लेकिन पर्वतारोहण की उसकी कला आधुनिक कृत्रिम साधनों पर निर्भर थी। यही कारण है कि जब उसने अपने बड़े भाई को पहाड़ की सीधी चढ़ाई पर मात्र एक मफलर के सहारे दूसरे को खींच कर ऊपर से ले जाते देखा तो उसने दाँतों तले उँगली दबा ली थी। वह अग्रज के समक्ष स्वयं को बोना समझने लगा।

शैला के प्रति उसके मन में कैशोर्यजन्य आकर्षण था। वह निरंतर उसे खुश रखने का प्रयत्न करता था। लेकिन शैला भूप सिंह के प्रति अनुरक्त थी। इस बात को ताड़ लेने के बाद ही उसके किशोर मन में हलचल मची होगी और प्रीति के आप्राप्त्य की बैचैन पीड़ा ने उसे घर-द्वार से अलग कर दिया होगा। रूप सिंह में कर्मण्ता है, लगन है, प्रेम की पीर है। भाई भाभी के प्रति अनुराग और समर्पण भाव है। इस अर्थ में वह सच्चा पहाड़ी है।

□□□